

**भारतीय संगीत और साहित्य पर दर्शन का प्रभाव
(गायन, वादन एवं नृत्य के परिप्रेक्ष्य में)**

डॉ. अमित कुमार वर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर, संगीत भवन
विश्वभारती विश्वविद्यालय, शांतिनिकेतन, प. बंगाल
Email: kr.amitverma@gmail.com

सारांश

भारतीय दर्शन मूलतः आध्यात्मिक होने के कारण विभिन्न कलाओं और साहित्य पर उसका प्रभाव दृष्टिगत होता है। इस कारण वैदिक काल से ही दर्शन और संगीत का पारस्परिक सम्बन्ध दिखना आरम्भ हो जाता है। वेद मूलतः दार्शनिक ग्रन्थ है किन्तु उनके मन्त्र गेय होने के कारण संगीतमय है। प्रस्तुत शोध पत्र में भारतीय संगीत और साहित्य पर दर्शन के प्रभाव को गायन, वादन एवं नृत्य के सन्दर्भ में रेखांकित करने का प्रयास किया गया है। लौकिक संगीत आहत नाद से उत्पन्न होता है अर्थात् द्वैत से उत्पन्न होता है किन्तु अद्वैत की ओर ले जाने का मार्ग भी वही है। वाद्य संगीत हो या नृत्य सभी की गहन अनुभूति की चरम अवस्था में दार्शनिक व्याख्या की गयी है।

मुख्य शब्द: भारतीय संगीत, वाद्य, नृत्य, दर्शन, साहित्य

दर्शनशास्त्र के सामान्य अर्थानुसार - दर्शन व्यक्ति के उन विचारों, विश्वासों और धारणाओं का पुंज है, जिसके अनुसार वह जीवन में सोचता और जीता है। देखने और दर्शन में गहन भेद है। देखना ऊपर-ऊपर होता है, जबकि दर्शन गहन अनुभूति, विश्लेषण और तात्त्विक गतिविधि है। बीज में छुपे विराट वृक्ष को देख लेना दर्शन है। विख्यात दार्शनिक खलील जिब्रान कहते हैं कि "मैंने स्त्री को देखा और उसके उन सभी बच्चों के बारे में जान लिया जो अभी पैदा नहीं हुए हैं और उस स्त्री जब मेरे चेहरे पर नज़र डाली तो मेरे उन पूर्वजों के बारे में जान लिया जो उसके जन्म से बहुत पहले ही मर चुके थे।"¹ अतः स्पष्ट है कि दर्शन सामान्य इन्द्रियों के पार जाकर गहन अनुभूति और विश्लेषण की प्रक्रिया है।

भारत में दार्शनिक परंपराओं का कला के साथ बड़ा गहरा संबंध रहा है। कलाओं के माध्यम से दर्शन हमेशा मुखरित होता रहा है और दर्शन ने भी कलाओं को उसके उत्कर्ष तक पहुंचाने में हमेशा मदद की है। काव्य और संगीत इन दोनों कलाओं के माध्यम से उस अमूर्त को मूर्त रूप देने की कोशिश हमेशा की जाती रही हैं।

निर्गुण राम सगुण भए कैसे
हृदय पीर असुवा भई जैसे

¹ जिब्रान, खलील. रेत और झाग. पृ. 9 नई दिल्ली: राजपाल प्रकाशन. 2010

UGC-CARE enlisted & Indexed in EBSCO International Database of Journals

लखनऊ के बड़े मकबूल शायर हुए जनाब कृष्ण बिहारी नूर साहब, उन्होंने अपनी शायरी में इश्क-ए-हकीकी की दास्तां बड़ी खूबसूरती से बयां की है, इसमें दर्शन का रंग कमाल का है....वो फरमाते हैं -

देना है खुदा तो निगाह को ऐसी रसाई दे
देखूँ आईने में अपना चेहरा तो मुझे तू दिखाई दे
यूं तो दरिया में होते हैं क्रतरे ही क्रतरे सब
क्रतरा वही है जिसमें समंदर दिखाई दे

‘देखूँ आईने में अपना चेहरा तो तू दिखाई दे.’ जाहिर है... द्वैध भाव मिट गया. आशिक और महबूब एक हो गए. भक्त और भगवान एक हो गए. अद्वैत घटित हो गया. समंदर में पानी का क्रतरा देखना तो सामान्य दृष्टि है लेकिन क्रतरे में समंदर देख लेना दर्शन हैं और अध्यात्म के मार्ग पर भी परमात्मा का जलवा आंखें बंद करने के बाद ही दिखता है, इसीलिए लखनऊ का एक मशहूर शेर है

चलते हैं उल्टी ही चाल दीवान गाने इश्क में
आंखों को बंद करते हैं दीदार के लिए

विभिन्न भक्ति परम्पराओं में भी जो साहित्य निर्मित हुआ उसमें भी जीवन के उच्च सिद्धांतों और उसमें व्याप्त दर्शन को सरल भाषा में आम अवाम तक पहुँचाया गया. सूफी परंपरा में अध्यात्म और दर्शन को तो आशिक और महबूब संकल्पना के माध्यम से बड़ी खूबसूरती के साथ बयां किया गया है.

हर रंग में, हर संग (पत्थर) में, हर जंग में पहचान
आशिक है तो महबूब को हर ढंग में पहचान

हबीब साहब की एक खूबसूरत रचना है, जिसमें भक्त और भगवान् के बीच की गुप्तगूं को बड़े सलीके से कलमबंद करते हैं. वो फरमाते हैं कि -

तुम्हे मंजूर है पर्दा, मुझे पास-ए-अदब वरना
मैं जब चाहूँ, जहां चाहूँ तेरा दीदार हो जाए
तेरी खातिर मैं हर ज़र्रे को सजदा करता फिरता हूँ
न जाने किस ज़र्रे में तेरा दीदार हो जाए
मुझे जलवा दिखाने में कहाँ इंकार होता है
नजर वाला कोई आए अभी दीदार हो जाए
फ़ना इतना हो जाऊं मैं तेरी जात ए आली में
जो मुझको देख ले उसको तेरा दीदार हो जाए
हबीब इतनी कशिश तो हो निगाह ए शौक में अपनी
इधर दिल में ख्याल आए उधर दीदार हो जाए

UGC-CARE enlisted & Indexed in EBSCO International Database of Journals

भारतीय संगीत में प्रयुक्त वाद्य यंत्रों की दार्शनिक व्याख्या अपने में अनूठी है। विभिन्न संगीत ग्रंथों में दार्शनिक आधार पर वाद्यों की उत्पत्ति व उनके प्रयोग के विषय में वर्णन किया गया है। नादबिंदुपनिषद में कहा गया है कि "आंतरिक नाद को दाएं कान से सुनना चाहिए। अभ्यास करते रहने पर बाहरी ध्वनियां रुक जाएंगी। अभ्यास की पहली अवस्था में अनेक प्रकार के नाद सुनाई देंगे। अभ्यास बढ़ने पर उत्तरोत्तर सूक्ष्म नाद सुनाई देंगे। पहले समुद्र गर्जन, बादल, डंका, झरना तत्पश्चात मृदंग, घंटा और काहल ध्वनि के पश्चात अंतिम चरण में घुंघरू, बांसुरी, वीणा और भ्रमरगुंजार की ध्वनि सुनाई देगी।" समाधि अथवा तुरीय अवस्था में चुनी गई ध्वनियों के आधार पर वैसी ही ध्वनि उत्पन्न करने के प्रयत्न ने घंटा, शंख, बंसी, वीणा एवं मृदंग जैसे वाद्यों को जन्म दिया इन वाद्यों का पूजन के समय देव मंदिरों में प्रयोग होने के कारण इनका समाधि में सहायक होना है। (शुक्ल, 2001)।

भारतीय आध्यात्मिक वृत्ति ने मृदंग की जो व्याख्या की है उसके अनुसार मृदंग की दाईं और रुद्र और बाईं और उमा प्रतिष्ठित हैं। अतः मृदंग का नाद शिव शक्ति मय है। मात्र शिवनाद से व्याधि शक्तिनाद से दरिद्र, श्रुतियुक्त दो नादों (शिव शक्ति) से युक्त मृदंग वादन श्रेष्ठ होता है। श्रुति संयुक्त, व्यक्त और मधुर नाद श्रेष्ठ आयु और लक्ष्मी कारक होता है।" मृदंग के ये लक्षण नारद द्वारा कहे गए हैं। (शुक्ल, 2001)

विद्वान लेखक हृदय नारायण दीक्षित लिखते हैं - ऋग्वेद में देवताओं का स्तुतिगान है। गायन वादन के उपकरणों को भी देवता मानकर प्रार्थनाएं की गई हैं। यहां वाणी की स्तुति है तो वाद्य यंत्रों की वंदना भी है। दुंदुभी एक बाजा है। युद्ध के समय इसका उपयोग होता था। ऋषि दुंदुभि से कहते हैं कि – “हे दुंदुभी, आप अपनी ध्वनि से भूलोक द्युलोक को गुंजायमान करें। जंगम स्थावर जब तक आप की अनुभूति हो। आप हमारे शत्रुओं को भगाएं।”²

यहां वाद्य निर्जीव नहीं है। सामान्य मनुष्य भी नहीं हैं। ऋषि इसी दुंदुभि से फिर प्रार्थना करते हैं – “हे दुंदुभि, आप हमें तेज प्रदान करके हमारे पाप नष्ट करें। आपकी आवाज से शत्रु सैनिक रोए और हमारे निकट के शत्रुओं का विनाश करें।”³

भारतीय रागों में ऋतुओं की प्राकृतिक छटा सुनाई देती है। भारतीय संगीत की रचना अद्भुत है। प्राकृतिक सौंदर्य को ध्वनि रूप में प्रस्तुत करना असंभव था, लेकिन यह काम भारतीय संगीत ने किया। ध्वनि कान से ग्रहण होती है, दृश्य आँखों से, लेकिन संगीत ने दृश्य सौंदर्य को कर्णप्रिय बनाया। हमारे संगीतकारों ने प्रकृति के मनोरम दृश्य सुने और सुनाने की विधि निकाली। 'राग मल्हार' वर्षा का आनंद है। 'राग भटियाली' बंगाल की नदियों के प्रवाह की धुन है। 'राग मांड' में मारवाड़ प्रदेश का शुष्क रेगिस्तान ध्वनि बनता है। इस प्रकार भारतीय संगीत पर्यावरण, समय और क्षेत्र के अनुसार विविध आयामी है।⁴

² दीक्षित, हृदय नारायण. भारतीय संस्कृति की भूमिका. पृ. 164

³ वही

⁴ दीक्षित, हृदय नारायण. भारतीय संस्कृति की भूमिका. पृ. 161

UGC-CARE enlisted & Indexed in EBSCO International Database of Journals

ऋषि याज्ञवल्क्य भी कहते हैं कि वीणा वादन का तत्व जानने वाला और श्रुति तथा जाति के मर्म को पहचानने वाला एवं ताल का ज्ञान रखने वाला मोक्ष को अनायास ही प्राप्त कर लेता है।

राग ध्यान में कविता, संगीत और चित्र तीनों ललित कलाओं का सुंदर समन्वय हुआ है। संगीत के संदर्भ में ध्यान का अर्थ है किसी राग को गाने या बजाने से पूर्व स्वरों का मिलाना फिर उन स्वरों का एक रूप बनाकर उसमें लीन हो जाना। उसे देवता के भौतिक शरीर के रूप में देखना। चित्रकार की भांति उसका चित्र तैयार करना और उसको देवी या देवता का रूप देखकर उसकी स्थापना करना। इन सब का उद्देश्य केवल आत्म प्रत्यय ही होता है।

तांत्रिक उपासना पद्धति में जिस प्रकार देवताओं का रूप ध्यान होता है उसी के आदर्श पर संगीत में भी उपासना का प्रवर्तन करने के लिए राग ध्यान पद्धति का आरंभ हुआ होगा। (मुसलगांवकर, 1995)

जैसा कि हम जानते हैं कि उल्लास के क्षणों को शारीरिक संवेग के साथ जीना ही नृत्य है। भारतीय नृत्यों के दार्शनिक पक्ष की व्याख्या विभिन्न विद्वानों ने भिन्न-भिन्न दृष्टिकोण से की है। विश्व प्रसिद्ध दार्शनिक ओशो के अनुसार भारतीय नृत्य विधाओं का विकास ध्यान की विधि के रूप में हुआ है। संगीतज्ञ या नर्तक के लिए ही नहीं, श्रोता या दर्शक के लिए भी वे गहरे ध्यान ध्यान के उपाय थे। (वर्मा, 2004)। विदुषी लेखिका लीला सैमसंग के अनुसार – “Classical Dance in India has aptly been termed a form of Yoga in recognition of its synthesis of physical energy and spiritual power.”⁵

दार्शनिक खलील जिब्रान कहते हैं कि “दार्शनिक की आत्मा उसके चिंतन में निवास करती है, कवि की आत्मा उसके हृदय में, गायक की कण्ठ में, किन्तु नृत्यांगना की आत्मा उसके अंग-प्रत्यंग में बसती है।” कवि गुरु रवींद्रनाथ के अनुसार मृत्यु का फव्वारा जीवन के स्थिर जल को नर्तन कराता है। इस संदर्भ में स्वामी विवेकानंद के विचार विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। वे कहते हैं कि यह दृश्यमान जगत कुछ और नहीं ईश्वर का ही नृत्य है। भारतीय दर्शन की तो यही मान्यता है कि सृष्टि जब नृत्य करते हैं तो संसार जन्म लेता है और जब वे ठहर जाते हैं तो शून्यता व्याप्त हो जाती है। जब वह अपने स्तर रूप में स्थिर हो जाते हैं तो दृश्य लोप होने लगता है। ईश्वर निश्चल और स्थिर हो जाता है। भारतीय नृत्य विधाओं का विकास मंदिरों की पृष्ठभूमि में हुआ है। प्राचीन मंदिरों में मूर्तियां नर्तन की अवस्था में उत्तीर्ण की गई हैं। डॉ. एस. एन. दास गुप्ता के अनुसार - नटराज की तांडव नृत्य मुद्रा संसार के सृजन और विनाश के अनंत नृत्य का प्रतीक है। वह अनंत दर्शन का सार तत्व है।⁶

स्पष्ट है कि भारतीय ज्ञान परम्परा में गहन दार्शनिक अनुभूति का साहित्य के माध्यम से प्रकटीकरण होना तथा उसे स्वर और लय-ताल बद्ध कर संगीतमय बनाते हुए, वाद्य यंत्रों का सहयोग लेते हुए अनुभूति की चरम पराकाष्ठा पर पहुंचाना साहित्य, संगीत और दर्शन के अन्तः सम्बन्ध को प्रकट करता है।

⁵ Samson, Leela. Rhythm in Joy: Classical Indian Dance Tradition.

⁶ गुप्ता, एस. एन. दास. सौंदर्य तत्व. पृ. 71

UGC-CARE enlisted & Indexed in EBSCO International Database of Journals

सन्दर्भ:

1. जिब्रान, खलील. *रेत और झाग*. नई दिल्ली: राजपाल प्रकाशन. 2010
2. दीक्षित, हृदय नारायण. *भारतीय संस्कृति की भूमिका*. वाराणसी: विश्विद्यालय प्रकाशन. 2008.
3. मुसलगांवकर, विमला. *भारतीय संगीत का दर्शनपरक अनुशीलन*. कलकत्ता: संगीत रिसर्च अकादमी. 1995.
4. वर्मा, अमित कुमार. "नादाधीन जगत सूत्र की व्याख्या". *ज्ञानायनी पत्रिका* (संयुक्तांक 2004). लखनऊ: राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, 2004.
5. शर्मा, पंकज माला. *नादबिंदुपनिषद: अनुवाद एवं हिंदी व्याख्या*. नई दिल्ली: संजय प्रकाशन. 2021.
6. शुक्ल, देवेन्द्रनाथ. *राग जिज्ञासा*. गोरखपुर: देवेन्द्रनाथ शुक्ल. 2001. (वितरक: विश्विद्यालय प्रकाशन, वाराणसी).
7. Samson, Leela. *Rhythm in Joy: Classical Indian Dance Tradition*. New Delhi: Lustre Press Pvt. Ltd. 1987.